

# प्रतिबंधित कविता खूनी बैसाखी

प्रतिभा झा

## शोध सारांश

पंजाब की माटी प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। चाहे बात की जाए पंजाब के किसानों और लहलहाते खेतों की, देश पर जान न्योछावर कर देने वाले वीर सपूतों की या फिर जन चेतना में क्रांति की ज्वाला जलाने वाले साहित्य की। पंजाब राज्य शुरू से ही समृद्ध और समाज व देश के लिए खुद को न्योछावर करने में सबसे आगे रहा है। पंजाब के साहित्यकारों ने न केवल पंजाबी- हिंदी साहित्य को अपनी महत्वपूर्ण रचनाओं से समृद्ध किया बल्कि उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत की खिलाफत करने के लिए भी अपनी कलम चलाई। इसी पंजाब की मिट्टी में जन्म हुआ था एक ऐसे साहित्यकार का जिन्होंने पंजाबी साहित्य को एक मुकाम पर पहुंचाया। वो साहित्यकार कोई और नहीं बल्कि नानक सिंह थे जिन्होंने साहित्य को एक अलग ऊंचाई पर पहुंचाया।

**बीज शब्द-** प्रतिबंधित, क्रांति, साहित्य, पंजाब, खिलाफत, आंदोलन

## मूल आलेख

जुलाई के महीने ने जलियांवाला बाग नरसंहार के कम से कम दो केंद्रीय पात्रों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नानक सिंह, जिन्होंने 'खूनी बैसाखी' और अनगिनत अन्य पंजाबी पुस्तक लिखने के लिए नरसंहार में जीवित बचे थे और सरदार उधम सिंह, जिन्होंने माइकल ओ'डायर की हत्या की, वह व्यक्ति जो नरसंहार के समय पंजाब का गवर्नर था, और जिसे 31 जुलाई 1940 को लंदन की पेंटनविले जेल में फाँसी दे दी गई थी।

जुलाई 1897 को हंस राज के रूप में जन्मे नानक सिंह को कम उम्र से ही लिखने का शौक था। बाद में उन्होंने सिख धर्म अपना लिया और सिख गुरुओं की प्रशंसा में कविता लिखना शुरू कर दिया। हालाँकि उन्हें कभी कोई औपचारिक शिक्षा या प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी वह शब्दों के माध्यम से एक ऐसा रास्ता खोजने में कामयाब रहे जो कई लोगों को गहराई से प्रभावित करता था।

नानक सिंह 22 वर्ष के थे, जब वह 1919 में बैसाखी के दिन क्रूर रोलेट एक्ट के विरोध में अपने कुछ दोस्तों के साथ जलियांवाला बाग गए थे। जनरल डायर के अधिकारियों की उन्मादी गोलीबारी और उसके बाद मची भगदड़ में उसके दोस्त मारे गये। नानक सिंह बच गये। जलियांवाला हत्याकांड के करीब एक वर्ष बाद नानक सिंह ने खूनी बैसाखी नाम से 1920 में एक लंबी कविता लिखी थी। यह कविता उन्होंने पंजाबी में लिखी थी। नानक सिंह की यह कविता

क्रांतिकारियों को अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन में हौसला दे रही थी। कविता के प्रकाशन के कुछ समय बाद अंग्रेजों ने 'खूनी बैसाखी' कविता को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मानते हुए इसे प्रतिबंधित कर दिया और इसकी मूल प्रति जब्त कर ली थी। वह एक प्रसिद्ध लेखक बन गए। उन्होंने 50 से अधिक उपन्यास, नाटक, लघु कथाएँ और निबंध लिखे, जिनमें 'इक म्याँ दो तलवारन' भी शामिल है, जिसके लिए उन्हें 1962 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। पंजाबी कथा साहित्य के पुरोधा सिंह ने प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी और पंजाब के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार जीते। सिंह ने पंजाबी पर ध्यान केंद्रित करते हुए आश्चर्यजनक रूप से 59 किताबें, 38 उपन्यास और अनगिनत अन्य नाटक, लघु कथाएँ और यहां तक कि अनुवाद भी लिखे। लेकिन इससे पहले उन्होंने एक कविता लिखी थी। नानक सिंह की कविता 'खूनी बैसाखी' से खोफजदा थे अंग्रेज।

जलियांवाला बाग में अंग्रेजों ने जो नरसंहार किया था उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। जनरल डायर की इस क्रूरता को करीब महसूस करने वाले दो लोग ऐसे थे जो लाशों की ढेर में जिंदा बच गए थे। उनमें से एक थे उधम सिंह और दूसरे थे नानक सिंह। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी वाले दिन रॉलेट ऐक्ट के विरोध में भारतीय नेता जलियांवाला बाग में अपनी-अपनी तकरीर दे रहे थे, उस समय 22 वर्ष के युवा नानक सिंह वही मौजूद थे। गोलीबारी होने पर नानक सिंह बेहोश हो गए थे। लेकिन उन्होंने इस क्रूरता को पास से देखा व महसूस किया था।

'खूनी बैसाखी' एक लंबी कविता है जिसमें जलियांवाला बाग में हुए नरसंहार, वास्तविक घटना और उसके परिणामों का विवरण दिया गया है। जलियांवाला बाग में नरसंहार एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ और उन्होंने न केवल 1920 में प्रकाशित खूनी बैसाखी में इस घटना का मार्मिक विवरण लिखा, बल्कि अकाली आंदोलन में भी भाग लिया। सिंह को लाहौर की बोस्टल जेल भेज दिया गया लेकिन इस अवधि ने उन्हें एक व्यक्ति और एक लेखक के रूप में बदल दिया। जहां उनकी किताब जख्मी दिल अप्रत्यक्ष रूप से विरोध का संदेश थी, वहीं खूनी बैसाखी में वर्णन प्रत्यक्ष था और बिना किसी लाग-लपेट के अंग्रेजों पर हमला बोला गया था।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि खूनी बैसाखी की तरह जख्मी दिल जलियांवाला बाग नरसंहार 1919 की एक कविता में संबंधित पंजाबी कविता के साथ नानक सिंह के पोते संयुक्त अरब अमीरात में भारत के राजदूत नवदीप सूरी द्वारा अंग्रेजी अनुवाद भी शामिल है। दिलचस्प बात यह है कि इस पुस्तक में सर सिडनी रॉलेट के परपोते जस्टिन रॉलेट का एक निबंध भी शामिल है, जिन्होंने रॉलेट ऐक्ट लिखा था। कविता के पीछे की पृष्ठभूमि स्वयं एक अन्य पुस्तक का विषय होनी चाहिए कि कैसे अमृतसर त्रासदी के ठीक एक साल बाद 1920 में इसके प्रकाशन पर अंग्रेजों द्वारा कविता पर

प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसकी मौजूदा प्रतियां जल गईं और अंग्रेजी में अनुवादित होने से 60 साल पहले इसकी पुनः खोज हुई।

भारत में पाकिस्तानी सैनिकों के अपमानजनक आत्मसमर्पण और बांग्लादेश के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरने के कुछ ही हफ्ते बाद दिसंबर 1971 में नानक सिंह का निधन हो गया। उन्होंने एक घटनापूर्ण जीवन जीया जिसे अमृतसर में जलियांवाला बाग त्रासदी ने बदल दिया फिर ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ एक उत्साही कार्यकर्ता और स्वतंत्रता-सेनानी के रूप में और 1947 में भारत के विभाजन के गवाह के रूप में। खूनी बैसाखी गुरु गोबिंद सिंह के आह्वान के साथ शुरू होती है और 13 अप्रैल की उस भयावह शाम तक की मुख्य घटनाओं का विस्तृत वर्णन करने से पहले 'रॉलेट एक्ट विवाद' की ओर बढ़ती है। लेकिन किसी को उस संदर्भ की कल्पना करनी चाहिए जिसमें यह कविता लिखी गई थी। नानक सिंह जलियांवाला बाग नरसंहार के सदमे में जीवित बचे व्यक्ति के रूप में जो उस समय मात्र 22 साल का था; एक कठोर दमनकारी माहौल में उस सब की पीड़ा और सटीकता को व्यक्त करने का प्रयास कर रहा था। उन्होंने यथासंभव तेजी से शब्दों की मितव्ययिता के साथ गवाही दी और जीवित रहे।

मूल रूप से पंजाबी में लिखी गई इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है और इसे हिंदी में लिखे मूल संस्करण के साथ प्रस्तुत किया गया है। कविता की शुरुआत गुरु गोबिंद सिंह के आह्वान से होती है, जो कविता की शुरुआत में भी मार्शल भावनाओं को समाहित करती है। दिन-प्रतिदिन की घटनाओं का लेखा-जोखा, भावनाओं के उत्तम मिश्रण के साथ, पाठकों की रुचि बढ़ाने में कभी असफल नहीं होता। पारंपरिक रूप से भगवान राम के जन्म के उपलक्ष्य में मनाई जाने वाली राम नवमी को मुसलमानों की समान भागीदारी से एकता के त्योहार में बदलने का वर्णन सिंह लिखते हैं, "हालाँकि यह हिंदुओं का त्योहार था, मुसलमानों ने इसे सिर्फ अपना बना लिया।"<sup>1</sup> उसके बाद का वर्णन 13 अप्रैल का है। बैसाखी का जश्न मनाने के लिए सैकड़ों लोग इकट्ठा हुए थे। यह खुशी का क्षण था। बैसाखी का त्योहार था और जलियांवाला बाग खुशी में डूबा हुआ था। दोस्तों की तिकड़ी त्योहार मनाने के लिए वहां गई थी। हर किसी को पता नहीं था कि जनरल डायर जल्द ही निर्दोष लोगों के नरसंहार का आदेश देगा, जिससे खुशी का दिन औपनिवेशिक सरकार द्वारा हिंसा के सबसे वीभत्स और भीषण कृत्यों में से एक में बदल जाएगा। विरोध के माध्यम के रूप में कविता का उपयोग करते हुए सिंह ने 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन हुए नरसंहार के लिए ब्रिटिश शासकों का दस्तावेजीकरण किया और उनसे पूछताछ की। 22 वर्ष की आयु के सिंह ने बैठक में भाग लेने का फैसला किया था। रॉलेट एक्ट के खिलाफ विरोध दर्ज कराने के लिए जलियांवाला बाग में सभा आयोजित किया गया। जलियांवाला बाग नरसंहार पर इस कविता में सिंह लिखते हैं, रॉलेट एक्ट ने एक भँवर के घोंसले को हिला दिया, पूरे देश में आग की तरह निराशा फैल गई। जैसे ही तेरह अप्रैल को घड़ी में पाँच बजे, वे सभी बाग में इकट्ठा हो गए। इस नरसंहार में तीन दोस्तों में से दो की

मौत हो गई। जलियांवाला बाग में मौजूद सिंह भगदड़ में गिर गए और लाशों के ढेर के नीचे रह गए। उन्हें न केवल मानसिक आघात पहुंचा और उनके कान को क्षति पहुंची, बल्कि उन्होंने अपने दो दोस्तों को भी खो दिया, जो उनके साथ बाग में गए थे। “वे भोगी माताओं के सुंदर लड़के, अब चले गए, त्याग दिए गए, उनके नाम अज्ञात हैं... नानक सिंह कहते हैं, उनमें से हर एक को एक गोली लगी, जिस पर केवल उसका नाम लिखा था... हे भगवान! हमारी प्रार्थना अवश्य सुनें, आपका कोमल झुंड पूरी तरह से निराशा में है।”<sup>iii</sup> अब जो मित्र बच गया उसने लेखन के अपने जुनून को औपनिवेशिक शासन को चुनौती देने के लिए एक उपकरण में बदलने का फैसला किया और इस तरह, नानक सिंह राज्य के दुश्मन और कई लोगों के नायक बन गए।

मात्र 900 पंक्तियों की एक पुस्तिका, खूनी बैसाखी पर प्रतिबंध लगा दिया गया और सभी प्रतियां ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर नष्ट कर दी गईं। परिवार के पास एक भी प्रति नहीं बची। मूल प्रति का पता लगाने का सफर किसी रोमांच से कम नहीं है। सिंह के पोते नवदीप सूरी ने महान ऐतिहासिक मूल्य की इस छोटी सी किताब का पता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कोई भी तुरंत परिवार के सदस्यों के उत्साह को साझा कर सकता है जब अंततः उन्हें पुराणन सिख लिखतियां की एक हार्डबाउंड प्रति मिली और जिसमें प्रकाशन की तारीख 30 मई, 1920 दी गई थी। पुस्तक का सबसे प्रभावशाली और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा सिडनी रॉलेट के परपोते जस्टिन रॉलेट का योगदान है।

मेरे लिए जो बात काम करती है वह न केवल यह है कि सिंह जनरल डायर द्वारा की गई गलत सलाह के कारण हुई दुखद और जानलेवा घटनाओं को कितनी ईमानदारी से याद करते हैं, बल्कि यह कविता जाति, धर्म और राष्ट्रियता से परे भारतीयों की एकता के लिए एक श्रद्धांजलि है, खासकर इस खंड में 'हिंदू-मुस्लिम एकता के बीच राम नवमी समारोह' पर।

“ऐसा सौहार्द पहले कभी नहीं देखा चूँकि भगवान ने यह दुनिया बनाई है, हे मेरे दोस्तों!”<sup>iiii</sup>

कविता में सिंह उसी प्रभाव तक पहुँचते हैं, भले ही वह अधिक गीतात्मक हो, जिसे प्रसिद्ध लेखक कृष्ण चंदर ने अपने 1948 के संग्रह 'हम वहशी हैं' में 'अमृतसर, आजादी से पहले' नामक उसी घटना पर लघु-कहानी में अपने गायन गद्य में हासिल किया था। कृष्ण चंदर की तरह, सिंह उन महिलाओं को नहीं भूलते हैं जिन्होंने इस त्रासदी में अपना हिस्सा लिया था, जिसमें 'पत्नियाँ अपने पतियों का शोक मनाती हैं' और 'बहनों का विलाप' जैसे खंड शामिल हैं। हालाँकि, खूनी बैसाखी में स्थान का गौरव डायर को जाता है, जिसका शीर्षक 'डायर को शहीदों का प्रमाणपत्र' है, जिसे उद्धृत किया जाना चाहिए।

“तुम्हें शर्म आनी चाहिए, निर्दयी डायर हे डायर, तुम्हें पंजाब में क्या लाया?

हमारे प्रभु तुम्हें तुम्हारे अपराधों की सज़ा देंगे देखो तुम कैसे नष्ट हो जाते हो, हे डायर”<sup>iv</sup>

नानक सिंह कहते हैं, कौन सा पवित्र ग्रंथ इसकी इजाजत देता है क्या निर्दोषों को इस तरह मारा जाएगा, हे डायर? अपनी आत्मकथा ‘ मेरी दुनिया ’ में सिंह ने लिखा, “ मेरा समाज और मैं, मेरी मानवता और मेरा स्व, इतने मेल खाते हैं कि मैं कभी भी उनके अलावा कुछ भी नहीं सोच सकता। अगर कोई चीज़ मेरे समाज या मेरी मानवता को ठेस पहुँचाती है, तो इससे मुझे ठेस पहुँचती है।”<sup>v</sup> ये वे मूल्य हैं जो उनकी खूनी बैसाखी को रोशन करते हैं और हमारे ही समय में हमारे बीच डायर के लिए चेतावनी की प्रतिध्वनि देते हैं।

कोई भी नानक सिंह के लेखन में धार्मिक मुद्दों से लेकर सामाजिक और फिर राजनीतिक बदलाव को आसानी से देख सकता है। हालाँकि, सामाजिक- राजनीतिक और धार्मिक प्रक्षेप पथ न केवल सिंह के व्यक्तित्व को दर्शाते हैं, बल्कि हमारे देश का एक ऐतिहासिक विवरण भी प्रस्तुत करते हैं।

खूनी बैसाखी एक कविता जो उन्होंने जलियांवाला बाग नरसंहार के बाद लिखी थी, पहली बार उन्हें अंग्रेजों की बुरी कितारों में शामिल किया गया था। यह उनके लिए बेहद आलोचनात्मक लेख था और उन्होंने इस पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया। फिर भी नानक रुकने को तैयार नहीं थे। उन्होंने अकाली आंदोलन या गुरुद्वारा सुधार आंदोलन में शामिल होकर अपने प्रतिरोध को अगले स्तर तक पहुंचाया। इसमें गुरुद्वारों की स्वायत्तता और उनका स्वामित्व समुदाय के हाथों में होने का आह्वान किया गया न कि अंग्रेजी द्वारा नियुक्त अधिकारियों के हाथों में। सामाजिक सुधार की यह पुकार जल्द ही अंग्रेजों के खिलाफ एक पूर्ण आंदोलन में बदल गई। सिंह ने न केवल अपने लेखन के माध्यम से लोगों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित किया, बल्कि वे स्वयं भी इसमें सक्रिय भागीदार रहे। जैसे ही पंजाब में असंतोष की लहर उठी ब्रिटिश सरकार हरकत में आई और नानक को लाहौर की बोस्ट्रल जेल में भेज दिया गया। जेल की कोठरी की लोहे की छड़ें भी उनकी बातों को दुनिया तक पहुंचने से नहीं रोक सकीं। सिंह ने 40,000 पृष्ठों के कई उपन्यास लिखे और उस दौरान उनका दूसरा कविता संग्रह ‘जख्मी दिल’ लिखा। ये कविताएँ गुरु का बाग मोर्चा के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर क्रूर कार्रवाई पर आधारित थीं। अपने पूरे जीवन में उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान जीवन के अंतर्निहित विषय पर साहित्य का निर्माण किया।

देश आजाद होने के बाद भी उन्होंने अपना काम जारी रखा। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि नानक सिंह को अब तक के सबसे प्रभावशाली पंजाबी लेखकों में से एक क्यों गिना जाता है। खूनी बैसाखी पढ़ते समय, किसी को यह महसूस होता है कि शायद जलियांवाला बाग हत्याकांड पर साहित्य समृद्ध है, विभाजन ने भी सिंह के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्होंने इस विषय पर अगग दी खेड़, खून दे सोहिले और मंजधार जैसे उपन्यास लिखे लेकिन उन

उपन्यासों को पंजाबी के बाहर व्यापक दर्शकों तक पहुंचना बाकी है। हमारी सामूहिक ऐतिहासिक स्मृति के पहले और बाद के प्रसंगों के बारे में भी यही कहा जा सकता है- चाहे वह 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हो, 1930 का नमक मार्च हो, करतार सिंह सराभा और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों सहित आंदोलन के नायक हों या रॉयल 1946 का भारतीय नौसेना विद्रोह। बेशक 1971 की घटनाओं पर एक आभासी चुप्पी है। शायद यह हमारे लिए है कि सिंह कविता में लिखते हैं

“कोई पट्टिका नहीं,

कोई आवक्ष प्रतिमा नहीं,

कोई स्मारक नहीं उस स्थान को चिह्नित करने के लिए जहां हम मरे थे, हे मित्रों?”<sup>vi</sup>

### निष्कर्ष

खूनी बैसाखी पढ़ने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि सिंह को पंजाबी उपन्यास का जनक क्यों बताया गया है। कविता स्वयं अमृतसर और जलियांवाला बाग नरसंहार का एक लोकप्रिय और सामाजिक इतिहास है, एक दुर्लभ प्रत्यक्षदर्शी के रूप में इसका अत्यधिक मूल्य घटना के किसी भी अकादमिक इतिहास को मात देता है। नानक सिंह ने पंजाबी साहित्य को जो दिया वह अद्वितीय है। यह उनके और उनके कहानी लेखन के कारण था जिसने इसमें धर्मनिरपेक्ष तत्वों को शामिल किया। भले ही 28 दिसंबर 1971 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनके जीवन से मिले सबक आज भी प्रासंगिक हैं। जिसके पास कलम है, उसकी जिम्मेदारी है कि वह अपने शब्दों का इस्तेमाल खामोश लोगों की कहानियों को सामने लाने और गलत को चुनौती देने के लिए करे।

### संदर्भ ग्रंथ

- ❖ नानक सिंह, अनु. नवदीप सूरी, खूनी बैसाखी, हार्पर पेरेनिअल इंडिया(Harper Perennial India),2019

### सहायक ग्रंथ

- ❖ नानक सिंह, मेरी दुनिया, नानक सिंह पुस्तकमाला, अमृतसर, प्रकाशन वर्ष: 2015
- ❖ <https://thewire.in/books/book-review-discovering-nanak-singh-khooni-vaisakhi>
- ❖ <https://www.peepultree.world/livehistoryindia/story/people/nanak-singh-power-of-the-pen>
- ❖ Nanak Singh, Sikh-heritage.co.uk.
- ❖ The Tribune India <http://www.tribuneindia.com/2004/20041223/aplus.htm#1>

<sup>i</sup> नानक सिंह, अनु. नवदीप सूरी, खूनी बैसाखी, हार्पर पेरेनिअल इंडिया(Harper Perennial India),2019, 'हिंदू- मुस्लिम एकता के बीच राम नवमी समारोह'

<sup>ii</sup> नानक सिंह, अनु. नवदीप सूरी, खूनी बैसाखी, हार्पर पेरेनिअल इंडिया(Harper Perennial India),2019, 'डायर को शहीदों का प्रमाणपत्र'

<sup>iii</sup> नानक सिंह, अनु. नवदीप सूरी, खूनी बैसाखी, हार्पर पेरेनिअल इंडिया(Harper Perennial India),2019, 'हिंदू- मुस्लिम एकता के बीच राम नवमी समारोह'

<sup>iv</sup> नानक सिंह, अनु. नवदीप सूरी, खूनी बैसाखी, हार्पर पेरेनिअल इंडिया(Harper Perennial India),2019, 'डायर को शहीदों का प्रमाणपत्र'

<sup>v</sup> नानक सिंह, मेरी दुनिया, नानक सिंह पुस्तकमाला, अमृतसर, प्रकाशन वर्ष: 2015

<sup>vi</sup> नानक सिंह, अनु. नवदीप सूरी, खूनी बैसाखी, हार्पर पेरेनिअल इंडिया(Harper Perennial India),2019, 'डायर को शहीदों का प्रमाणपत्र'

